कागज की नाव

पपीहा श्रीवास्तवा
लखनपुर, कानपुर

कागज की नाव

ये धुंधले उजाले, ये घनघोर अंधेरे,
कादम्बिनी के ये साये घनेरे
मेघाछन्न व्योम से बूंदे लगी हैं बरसने
आह्लादित धरा को रिमझिम गीत सुनाने।
आकुल–व्याकुल सम्पूर्ण जड़–चेतन
आषाढ़–सावन आज सब प्रेम में है मग्न
बावरी हवा धारानिपात फिर झिलमिलाती धूप,
सांवली धरती का विस्मयकारी सुनहरा स्वरूप।
इस अवर्णनीय सुंदरता में छा गया
कागजी नाव का मौसम
नन्हें नावों को पानी में तैराते,
किसी अनजानी मंजिल की ओर ले जाते,
हर्षातिरेक बच्चों का आतुर है मन।
छा गया देखो मस्त बरसात का मौसम,
आत्मा के उल्लास का मौसम,
कागज़ के नाव में बसे बचपन को,
टकटकी बाँधे दूर बहते देखने का मौसम।

जीवन क्या है पानी

इस जीवन की शुरूआत है पानी,
इस जीवन का अन्त है पानी,
यूँ तो प्यास बुझाने के लिये मिलते पेय कई
पर जीवन का अमृत तो है सिर्फ पानी।
हर जीवन का सार है पानी,
पृथ्वी जीवन है क्योंकि इसमें है पानी,
यह ज़मीन तो तैरता हुआ तिनका है,
गर चाहे तो पल में हमें मिटा सकता है पानी।
पानी का संतुलन जब भी है बिगड़ता,
तो सबकुछ तहस–नहस हो जाता,
कभी सैलाब बन सबकुछ बहा ले जाता,
तो कभी एक बूँद के लिये सबको तरसा जाता।
एक जल ही है जो प्रकृति में,
तीनों स्थितियों में विराजमान है रहता,
ठोस, द्रव्य एवं वाष्प बनकर,
हमारे पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी को है सँवारता।
पानी है तो जीवन में रस है,
पानी है तो जीवन में रंग है,
पानी ही तो भरता हर सभ्यता–संस्कृति में
जीने की एक नई उमंग है।

रहे गुलज़ार संवेदना का आँगन

संवेगों की तरलता जब जोर देती है,
तब ही आँखों से नीर बहता है
तब ही आसमानों से बूँदें बरसती हैं,
और नवजीवन फिर–फिर परिभाषित होता है।
परहित की अग्नि में तपकर ही तो
सागर, दूर गगन में बादल का रूप लेता है,
वही मेघ संवदेनाओं से ओत–प्रोत होकर
धरती पर सुख की रसधारा बरसाता है।
फिर हमने मानवीय भावनाओं की कोमल कलियों को,
क्यों स्वार्थ और संवदेनहीनता की आग में झोंक दिया,
पानी व्यर्थ बहाते रहे, संचय उसका कभी न किया,
इतना प्रदूषण फैलाया कि कराह उठी जीवनदायी नदियाँ।
जाग जाओ नहीं तो सूख जायेगी आने वाली पीढ़ी,
वृक्षों को बचाओ ताकि बची रहे जीवन की हरियाली,
गुलज़ार रखो संवेदनाओं को, ताकि भरा रहे आँखों में पानी,
नहीं तो भूल जायेंगी बरसना, रिमझिम बूँदे आसमानी....